

महात्मा जयप्रकाश नारायण अहमदाबाद। अहमदाबाद मुनि नारायण-पुष्पाहा-
 लोकहित के लिये इस निष्पत्तिक निम्न में चर्चा करने के लिये
 लोकोपयोगी नारायण रचनाकार के विभागादि संघ संघोजनकर
 विविध रसक उपनिबन्ध करवाठ चाही। उद्योग्य देन
 औ करेन चाही - जेना इनके प्रकारक व्यंजन भा
 शोधधि उद्योग्य संघीग से पैय रसक निष्पत्ति गेइए
 शोधि प्रकारि विविध (विभागादि) भावक पैय से
 नाका रस निष्पत्त गेइए। रस कौन पदार्थ चिक्र
 एक उन्नत देन अहम मुनि करलनि जे आस्वाद रस
 शिव। आस्वाद केने गेइए। एक उन्नत देन अहम
 मुनि कात्पत्ति जे जेना नाना व्यंजन पदार्थ से युक्त
 अस्वादिक उपभोग करेन लोक आस्वाद प्राप्त करेन
 चाही। औसिना महदय भावक सभारिक अभितय (विभागादि)
 से युक्त रसायी भावक आस्वाद लेन चाही। निष्पत्तिक
 भावना से अहम मुनि के आसामा अव्ययन लयन
 चाही तथादि अहम लोत्तरक उत्पत्तिवाद का भागीपदा
 भव शक्तिक अनुमितिवाद का अनुमानवाद भइ लाजकर
 मुक्तिवाद का भोगवाद तथा आचार्य अभितय गुरुक
 अभितयकिवाद से एकरा व्याख्यादिन करव जेन
 चाही। इमरा मुक्त एहि से ई कतौ बस्यन सेन
 चाही। रसक एगारह भेद चाही - भोग्य, रास्य, कस्य
 रीति, बीर, भयानक, अदभुत, मान्य वात्सल्य तथा सुभुत
 रसक निष्पत्तिक प्रक्रिया के ब्यवस्था
 करवाठ हेतु हम बीर रस के रस-सूत्रक संग उपभोग
 से प्रहसन रूप रसक ही -

- रसायीभाव - उत्साह।
- विभाव - (क) आलम्बन - शत्रु, दुष्टक कधि।
- (ख) आश्रम - संशयकर्ता सत्पन्न, कर्म लयकि।
- (ग) उदीपन - शत्रुक चेष्टा, दुष्टक कार्य से तप्यन।
- अनुभाव - मुँहक लाली, उत्साहपूर्वक गी, रोजीच
 हस्य भोजन।
- संचारीभाव - चैय, गंवि, रक।

रसक आनन्दः परिणाम दिन मेकर भेदः
अनुभूति काठ्यशास्त्र मे 'रस' श्रेणि

आनन्द विशेषक तेषक यदि अकर अनुभूति
में प्रलेखित तथा अनिर्वचनीय आनन्द प्राप्त होइत।
एहि आनन्द के 'वदमानन्द शशेदष' कहत गेल
अनुभूति दु प्रकारक होइत - १ प्रत्यक्षानुभूति
एव २ इयानुभूति। मनुष्य अपन व्यवहार
मात्रक में प्रेम, करुणा, घृणादि भावक जे अनु-
भूति करैत ओकरा प्रत्यक्षानुभूति कहत जाइत तथा
काठ्य वा नाटकदि के धरला से का देखला से
जे हृदय मे प्रेम, करुणा, घृणादि भाव जागृत
होइत ओकरा इयानुभूति कहत जाइत।

महत्व दैल गेल अदि। वृद्धारण्यक उपनिषद मे
रसक महत्व प्रतिपादित करैत कहत गेल अदि
जे अहिवा मानव मात्र आत्माक दर्शन मनन
चिन्तन से सभ किछु प्राप्त कर लैत, ओहि प्रकार
काठ्य मे रस के सेवे आत्मा कहत गेल अदि।
एहि नाट्यात्माक ज्ञान मात्र से काठ्यक कान
सभ तत्वक ज्ञान वा दर्शन भए जाइत।

रसक परिभाषा दिन अरु
मुनि कहलनि अदि - 'विभावानुभाव व्यभिचार्य
संयोगादुत्पत्तिः' अर्थात् विभाव, अनुभाव एवं
व्यभिचायी भावक संयोग से रसक निष्पत्ति होइत।
आचार्य विश्वनाथ सेवे एकरा स्पष्ट करैत
कहैत अदि - 'विभावानुभाव व्यभिचार्य तथा
संयोगात्पत्तिः रसादीः रसादीः संयोगात्'।

रसक उपर्युक्त परिभाषा
मे विभाव, अनुभाव, संचारीभाव भादि शब्द
सामील अदि। इएह सभ रसक विनिर्गत



